C.B.S.E

कक्षा : 9

हिंदी (अ)

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश:

1) इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।
2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खंड - क

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (1×2=2) (2×3=6)8

सूर्य अस्त हो रहा था। पक्षी चहचहाते हुए अपने नीड़ की ओर जा रहे थे। गाँव की कुछ स्त्रियाँ अपने घड़े लेकर कुएँ पर जा पहुँची। पानी भरकर कुछ स्त्रियाँ तो अपने घरों को लौट गई, परंतु चार स्त्रियाँ कुएँ की पक्की जगत पर ही बैठकर आपस में बातचीत करने लगी। तरह-तरह की बातचीत करते-करते बात बेटों पर जा पहुँची। उनमें से एक की उम्र सबसे बड़ी लग रही थी। वह कहने लगी - 'भगवन सबको मेरे जैसा ही बेटा दे। वह लाखों में एक है। उसका कंठ बहुत मधुर है। उसके गीत को सुनकर कोयल और मैना भी चुप हो जाती है। सच में मेरा बेटा तो अनमोल हीरा है।"

उसकी बात सुनकर दूसरी अपने बेटे की प्रशंसा करते हुए बोली - "बहन मैं तो समझती हूँ कि मेरे बेटे की बराबरी कोई नहीं कर सकता। वह बहुत ही शक्तिशाली और बहादुर है। वह बड़े-बड़े पहलवानों को भी पछाड़ देता है। वह आधुनिक युग का भीम है। मैं तो भगवान से कहती हूँ कि वह मेरे जैसा बेटा सबको दे।"

दोनों स्त्रियों की बात सुनकर तीसरी भला क्यों चुप रहती? वह भी अपने को रोक न सकी। वह बोल उठी - "मेरा बेटा साक्षात् बृहस्पति का अवतार

है। वह जो कुछ पढ़ता है, एकदम याद कर लेता है। ऐसा लगता है बहन, मानों उसके कंठ में सरस्वती का वास हो।"

तीनों की बात सुनकर चौथी स्त्री चुपचाप बैठी रही। उसका भी एक बेटा था। परंतु उसने अपने बेटे के बारे में कुछ नहीं कहा।

जब पहली स्त्री ने उसे टोकते हुए पूछा की उसके बेटे में क्या गुण है, तब चौथी स्त्री ने सहज भाव से कहा - "मेरा बेटा न गंधर्व-सा गायक है, न भीम-सा बलवान और न ही बृहस्पति।" यह कह कर वह शांत बैठ गई।

कुछ देर बाद जब वे घड़े सिर पर रखकर लौटने लगीं, तभी किसी के गीत का मधुर स्वर सुनाई पड़ा, गीत सुनकर सभी स्त्रियाँ ठिठक गई। पहली स्त्री शीघ्र ही बोल उठी - "मेरा हीरा आ रहा है। तुम लोगों ने सुना, उसका कंठ कितना मधुर है।" तीनों स्त्रियाँ बड़े ध्यान से उसे देखने लगी। वह गीत गाता हुआ उसी रास्ते से निकल गया। उसने अपनी माँ की तरफ़ ध्यान नहीं दिया।

थोड़ी देर बाद दूसरी का बेटा दिखाई दिया। दूसरी स्त्री ने बड़े गर्व से कहा, "देखो मेरा बलवान बेटा आ रहा है। वह बातें कर ही थी कि उसका बेटा भी उसकी ओर ध्यान दिए बगैर निकल गया।"

तभी तीसरी स्त्री का बेटा उधर से संस्कृत के श्लोकों का पाठ करता हुआ निकला। तीसरी ने बड़े गद्गद् स्वर में कहा "देखो, मेरे बेटे के कंठ में सरस्वती का नाम है। वह भी माँ की ओर देखे बिना आगे बढ़ गया।

वह अभी थोड़ी दूर गया होगा की चौथी स्त्री का बेटा भी अचानक उधर से जा निकला। वह देखने में बहुत सीधा-साधा और सरल प्रकृति का लग रहा था। उसे देखकर चौथी स्त्री ने कहा, "बहन, यही मेरा बेटा है।" तभी उसका बेटा पास आ पहुँचा। अपनी माँ को देखकर रुक गया और बोला, "माँ लाओ मैं तुम्हारा घड़ा पहुँचा दूँ। माँ ने मना किया, फिर भी उसने माँ के सिर से पानी का घड़ा उतारकर अपने सिर पर रख लिया और घर की ओर चल पड़ा।

तीनों स्त्रियाँ बड़े ही आश्चर्य से देखती रही। एक वृद्ध महिला बहुत देर से उनकी बातें सुन रही थी। वह उनके पास आकर बोली, "देखती क्या हो? वही सच्चा हीरा है।"

1. पहली तथा दूसरी स्त्री ने अपने-अपने बेटे के विषय में क्या कहा?
2. तीसरी स्त्री ने अपने बेटे को 'बृहस्पति का अवतार' क्यों कहा?
3. पहली स्त्री द्वारा पूछे जाने पर चौथी स्त्री ने क्या कहा?
4. चौथी स्त्री के बेटे ने अपनी माँ के साथ कैसा व्यवहार किया, यह देखकर तीनों स्त्रियों को कैसा लगा?
5. बच्चों को अपने माता-पिता के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए? समझाइए।

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×3=3)

लाठी में हैं गुण बहुत, सदा रखिये संग।
गहरि नदी, नाली जहाँ, वहाँ बचावै अंग।।
वहाँ बचावै अंग, झपटि कुत्ता कहँ मारे।
दुश्मन दावागीर होय, तिनहूँ को झारै।।
कह गिरिधर कविराय, सुनो हे दूर के बाठी।
सब हथियार छाँडि, हाथ महँ लीजै लाठी।।
[कुंडलियाँ - गिरिधर कविराय]

1. इस कुंडली में किसकी उपयोगिता बताई गई गई है? कवि ने किस समय मनुष्य को लाठी रखने का परामर्श दिया है?
2. लाठी हमारे शरीर की सुरक्षा किस प्रकार करती है?
3. लाठी किन तीनों से निपटने में सहायक होती है और किस प्रकार?

प्र. 3 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2×2)=4

यह जीवन क्या है? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है।
सुख-दुख के दोनों तीरों से चल रहा राह मनमानी है।
कब फूटा गिरि के अंतर से? किस अंचल से उतरा नीचे?
किस घाटी से बह कर आया समतल में अपने को खींचे?

निर्झर में गति है, जीवन है, वह आगे बढ़ता जाता है!
धुन एक सिर्फ़ है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।
बाधा के रोड़ों से लड़ता, वन के पेड़ों से टकराता,
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन से मदमाता।
लहरें उठती हैं, गिरती हैं; नाविक तट पर पछताता है।
तब यौवन बढ़ता है आगे, निर्झर बढ़ता ही जाता है।
निर्झर कहता है, बढ़े चलो! देखो मत पीछे मुड़ कर!
यौवन कहता है, बढ़े चलो! सोचो मत होगा क्या चल कर?
चलना है, केवल चलना है ! जीवन चलता ही रहता है!
रुक जाना है मर जाना ही, निर्झर यह झड़ कर कहता है!

'जीवन का झरना'

कवि - आरसी प्रसाद सिंह

1. निर्झर के मार्ग में कौन-कौन-सी बाधाएँ आती हैं? वह उनका किस प्रकार सामना करता है?
2. नाविक कब पछताता है और क्यों?

खंड - ख

प्र. 4. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए : 1
अड़ियल, बसेरा

ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग पहचानिए : 1
प्रतिच्छाया, हेडमास्टर

ग) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और उपसर्ग को अलग कीजिए: 1
अंत:करण, सज्जन

घ) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और प्रत्यय को अलग कीजिए : 1
करनी, बालक

ड़) निम्नलिखित विग्रह का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखें : 3

- इच्छा के अनुसार
- जेब को कतरने वाला

- जल और वायु

च) अर्थ के आधार पर निम्न के वाक्य भेद बताइए: 4

1. कहाँ से आ रहे हो?
2. यदि तुमने मेहनत की होती तो तुम सफल हो जाते।
3. परिश्रमी लोग सफल होते हैं।
4. मैं आज दिल्ली नहीं जा रहा।

छ) निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए : 4

1. घेर-घेर घोर गगन अनुप्रास
2. धारा पर पारा पारावार यों हलत है
3. सब प्राणियों के मत्त मनोमयूर अहा नचा रहा।
4. फूलों के आस-पास रहते हैं, फिर भी काँटे उदास रहते हैं।

खंड - ग

प्र. 5. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (1+2+2)=5

बाबा कहते थे, इसको हम विदुषी बनायेंगे। मेरे संबंध में उनका विचार बहुत ऊँचा रहा। इसलिए 'पंचतन्त्र' भी पढ़ा मैंने, संस्कृत भी पढ़ी। ये अवश्य चाहते थे कि मैं उर्दू फ़ारसी सीख लूँ, लेकिन वह मेरे वश की नहीं थी। मैंने जब एक दिन मौलवी साहब को देखा तो बस, दूसरे दिन मैं चारपाई के नीचे जा छिपी। तब पंडित जी आये संस्कृत पढ़ाने। माँ थोड़ी संस्कृत जानती थीं गीत में उन्हें विशेष रूचि थीं। पूजा पाठ के समय मैं भी बैठ जाती थीं और संस्कृत सुनती थी। उसके उपरान्त उन्होंने मिशन स्कूल में रख दिया मुझको। मिशन स्कूल में वातावरण दूसरा था, प्रार्थना दूसरी थी। मेरा मन नहीं लगा। वहाँ जाना बंद कर दिया। जाने में रोने धोने लगी। तब उन्होंने मुझको क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में भेजा, जहाँ मैं पाँचवे दर्जे में भर्ती हुई, जहाँ का वातावरण बहुत अच्छा था उस समय। हिन्दू लड़कियाँ भी थी ईसाई लड़कियाँ भी थी, हम लोगों का एक ही मेस था। उस मेस में प्याज तक नहीं बनता था।

1. लेखिका के बाबा की क्या इच्छा थी?
2. लेखिका उर्दू-फ़ारसी क्यों नहीं सीख पाई?
3. लेखिका मिशन स्कूल जाने में रोने क्यों लगती थी?

प्र. 6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x4=8

1. किन घटनाओं से पता चलता है कि हीरा और मोती में गहरी दोस्ती थी?
2. आशय स्पष्ट कीजिए- सलीम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाए अथाह सागर बनकर उभरे थे।
3. नीचे दी गई पंक्तियों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए - जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्योछावर होती हैं।
4. लेखक ने शेकर विहार में सुमति को उनके यजमानों के पास जाने से रोका, परन्तु दूसरी बार रोकने का प्रयास क्यों नहीं किया?

प्र. 7. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (2+2+1)=5

कोहरे से ढकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं
सुबह-सुबह
काम पर जा रहे हैं
हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह
भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना
काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?

1. कविता की पहली दो पंक्तियों को पढ़ने तथा विचार करने से आपके मन-मस्तिष्क में जो चित्र उभरता है उसे लिखकर व्यक्त कीजिए।
2. कवि का मानना है कि बच्चों के काम पर जाने की भयानक बात को विवरण की तरह न लिखकर सवाल के रूप में पूछा जाना चाहिए कि 'काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?' कवि की दृष्टि में उसे प्रश्न के रूप में क्यों पूछा जाना चाहिए?
3. काव्यांश का मूलभाव क्या है?

प्र. 8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x4=8

1. कवयित्री का घर जाने की चाह से क्या तात्पर्य है?
2. बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों है?
3. एक लकुटी और कामरिया पर कवि सब कुछ न्योछावर करने को क्यों तैयार है?
4. 'कैदी और कोकिला' कविता के आधार पर पराधीन भारत की जेलों में दी जाने वाली यंत्रणाओं का वर्णन कीजिए।

प्र. 9. "पुरखों की गाढ़ी कमाई से हासिल की गयी चीज़ों को हराम के भाव बेचने को मेरा दिल गवाही नहीं देता।" - मालकिन के इस कथन के आलोक में विरासत के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए। 4

खंड - घ

प्र. 10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। 10

- एक समाजसेवक की आत्मकथा
- यदि हिमालय न होता

प्र. 11. आपके नगर में एक 'विज्ञान-कार्यशाला' का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यशाला के संयोजक को पत्र लिखकर बताइए कि आप भी इसमें सम्मिलित होना चाहते हैं। 5

प्र. 12. बढ़ते हुए महिला अपराध के संदर्भ में दो महिलाओं के मध्य बातचीत लिखिए: 5

C.B.S.E

कक्षा : 9

हिंदी (अ)

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश:

1) इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।
2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खंड - क

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (1×2=2) (2×3=6)8

सूर्य अस्त हो रहा था। पक्षी चहचहाते हुए अपने नीड़ की ओर जा रहे थे। गाँव की कुछ स्त्रियाँ अपने घड़े लेकर कुएँ पर जा पहुँची। पानी भरकर कुछ स्त्रियाँ तो अपने घरों को लौट गई, परंतु चार स्त्रियाँ कुएँ की पक्की जगत पर ही बैठकर आपस में बातचीत करने लगी। तरह-तरह की बातचीत करते-करते बात बेटों पर जा पहुँची। उनमें से एक की उम्र सबसे बड़ी लग रही थी। वह कहने लगी - 'भगवन सबको मेरे जैसा ही बेटा दे। वह लाखों में एक है। उसका कंठ बहुत मधुर है। उसके गीत को सुनकर कोयल और मैना भी चुप हो जाती है। सच में मेरा बेटा तो अनमोल हीरा है।"

उसकी बात सुनकर दूसरी अपने बेटे की प्रशंसा करते हुए बोली - "बहन मैं तो समझती हूँ कि मेरे बेटे की बराबरी कोई नहीं कर सकता। वह बहुत ही शक्तिशाली और बहादुर है। वह बड़े-बड़े पहलवानों को भी पछाड़ देता है। वह आधुनिक युग का भीम है। मैं तो भगवान से कहती हूँ कि वह मेरे जैसा बेटा सबको दे।"

दोनों स्त्रियों की बात सुनकर तीसरी भला क्यों चुप रहती? वह भी अपने को रोक न सकी। वह बोल उठी - "मेरा बेटा साक्षात् बृहस्पति का अवतार

है। वह जो कुछ पढ़ता है, एकदम याद कर लेता है। ऐसा लगता है बहन, मानों उसके कंठ में सरस्वती का वास हो।"

तीनों की बात सुनकर चौथी स्त्री चुपचाप बैठी रही। उसका भी एक बेटा था। परंतु उसने अपने बेटे के बारे में कुछ नहीं कहा।

जब पहली स्त्री ने उसे टोकते हुए पूछा की उसके बेटे में क्या गुण है, तब चौथी स्त्री ने सहज भाव से कहा - "मेरा बेटा न गंधर्व-सा गायक है, न भीम-सा बलवान और न ही बृहस्पति।" यह कह कर वह शांत बैठ गई।

कुछ देर बाद जब वे घड़े सिर पर रखकर लौटने लगीं, तभी किसी के गीत का मधुर स्वर सुनाई पड़ा, गीत सुनकर सभी स्त्रियाँ ठिठक गईं। पहली स्त्री शीघ्र ही बोल उठी - "मेरा हीरा आ रहा है। तुम लोगों ने सुना, उसका कंठ कितना मधुर है।" तीनों स्त्रियाँ बड़े ध्यान से उसे देखने लगी। वह गीत गाता हुआ उसी रास्ते से निकल गया। उसने अपनी माँ की तरफ़ ध्यान नहीं दिया।

थोड़ी देर बाद दूसरी का बेटा दिखाई दिया। दूसरी स्त्री ने बड़े गर्व से कहा, "देखो मेरा बलवान बेटा आ रहा है। वह बातें कर ही थी कि उसका बेटा भी उसकी ओर ध्यान दिए बगैर निकल गया।"

तभी तीसरी स्त्री का बेटा उधर से संस्कृत के श्लोकों का पाठ करता हुआ निकला। तीसरी ने बड़े गद्गद् स्वर में कहा "देखो, मेरे बेटे के कंठ में सरस्वती का नाम है। वह भी माँ की ओर देखे बिना आगे बढ़ गया।

वह अभी थोड़ी दूर गया होगा की चौथी स्त्री का बेटा भी अचानक उधर से जा निकला। वह देखने में बहुत सीधा-साधा और सरल प्रकृति का लग रहा था। उसे देखकर चौथी स्त्री ने कहा, "बहन, यही मेरा बेटा है।" तभी उसका बेटा पास आ पहुँचा। अपनी माँ को देखकर रुक गया और बोला, "माँ लाओ मैं तुम्हारा घड़ा पहुँचा दूँ। माँ ने मना किया, फिर भी उसने माँ के सिर से पानी का घड़ा उतारकर अपने सिर पर रख लिया और घर की ओर चल पड़ा।

तीनों स्त्रियाँ बड़े ही आश्चर्य से देखती रही। एक वृद्ध महिला बहुत देर से उनकी बातें सुन रही थी। वह उनके पास आकर बोली, "देखती क्या हो? वही सच्चा हीरा है।"

1. पहली तथा दूसरी स्त्री ने अपने-अपने बेटे के विषय में क्या कहा?

   उत्तर : पहली स्त्री ने अपने बेटे के विषय में कहा कि भगवन सबको उसके जैसा ही बेटा दे। वह लाखों में एक है। उसका कंठ बहुत मधुर है। उसके गीत को सुनकर कोयल और मैना भी चुप हो जाती है। उसका बेटा तो अनमोल हीरा है।

   दूसरी स्त्री ने कहा कि उसके बेटे की बराबरी कोई नहीं कर सकता। वह बहुत ही शक्तिशाली और बहादुर है। वह बड़े-बड़े पहलवानों को भी पछाड़ देता है। वह आधुनिक युग का भीम है। वह तो भगवान से कहती है कि वह उसके जैसा बेटा सबको दे।

2. तीसरी स्त्री ने अपने बेटे को 'बृहस्पति का अवतार' क्यों कहा?

   उत्तर : तीसरी स्त्री ने अपने बेटे को 'बृहस्पति का अवतार' कहा क्योंकि वह जो कुछ पढ़ता है, एकदम याद कर लेता है। और ऐसा लगता है मानो उसके कंठ में सरस्वती का वास हो।

3. पहली स्त्री द्‌वारा पूछे जाने पर चौथी स्त्री ने क्या कहा?

   उत्तर : पहली स्त्री द्‌वारा पूछे जाने पर चौथी स्त्री ने कहा कि उसका बेटा न गंधर्व-सा गायक है, न भीम-सा बलवान और न ही बृहस्पति।

4. चौथी स्त्री के बेटे ने अपनी माँ के साथ कैसा व्यवहार किया, यह देखकर तीनों स्त्रियों को कैसा लगा?

   उत्तर : जब चारों स्त्रियाँ घड़े सिर पर रखकर लौटने लगीं तब चौथी स्त्री के बेटे ने माँ के मना करने पर भी उनके सिर से पानी का घड़ा उतारकर अपने सिर पर रख दिया और घर की ओर चल पड़ा। यह देखकर तीनों स्त्रियाँ बड़े ही आश्चर्य से उसे देखती रही। क्योंकि वह अपने बेटे को हीरा मानती थी जो उन्हें अनदेखा कर आगे बढ़ गए।

5. बच्चों को अपने माता-पिता के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए? समझाइए।

उत्तर : बच्चों का यह परम दायित्व बनता है कि वे माता-पिता को पूर्ण सम्मान प्रदान करें और जहाँ तक संभव हो सके खुशियाँ प्रदान करने की चेष्टा करें। माता-पिता का सपना होता है कि पुत्र/पुत्री बड़े होकर उनके नाम को गौरवान्वित करे। अत: बच्चों को कड़ी लगन, मेहनत और परिश्रम के द्वारा उनका यह सपना पूर्ण कर माता-पिता का नाम गौरवान्वित करना चाहिए। माता-पिता की सेवा ही सच्ची सेवा है।

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×3=3)

लाठी में हैं गुण बहुत, सदा रखिये संग।
गहरि नदी, नाली जहाँ, वहाँ बचावै अंग।।
वहाँ बचावै अंग, झपटि कुत्ता कहँ मारे।
दुश्मन दावागीर होय, तिनहूँ को झारै।।
कह गिरिधर कविराय, सुनो हे दूर के बाठी।
सब हथियार छाँडि, हाथ महँ लीजै लाठी।।
[कुंडलियाँ - गिरिधर कविराय]

1. इस कुंडली में किसकी उपयोगिता बताई गई गई है? कवि ने किस समय मनुष्य को लाठी रखने का परामर्श दिया है?

उत्तर : इस कुंडली में लाठी की उपयोगिता बताई गई है। कवि ने हर समय लाठी रखने का परामर्श दिया है।

2. लाठी हमारे शरीर की सुरक्षा किस प्रकार करती है?

उत्तर : यदि कोई कुत्ता हमारे ऊपर झपटे तो लाठी से हम अपना बचाव कर सकते हैं। अगर हमें दुश्मन धमकाने की कोशिश करे तो लाठी के द्वारा हम अपना बचाव कर सकते हैं।

3. लाठी किन तीनों से निपटने में सहायक होती है और किस प्रकार?

उत्तर : लाठी नदी-नाले, कुत्ता और दुश्मनों से हमारा बचाव करती है। लाठी संकट के समय वह हमारी सहायता करती है। गहरी नदी और नाले को पार करते समय मददगार साबित होती है। यदि कोई कुत्ता हमारे ऊपर झपटे तो लाठी से हम अपना बचाव कर सकते हैं। अगर हमें दुश्मन धमकाने की कोशिश करे तो लाठी के द्वारा हम अपना बचाव कर सकते हैं। लाठी गहराई मापने के काम आती है।

प्र. 3 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2×2)=4

यह जीवन क्या है? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है।
सुख-दुख के दोनों तीरों से चल रहा राह मनमानी है।
कब फूटा गिरि के अंतर से? किस अंचल से उतरा नीचे?
किस घाटी से बह कर आया समतल में अपने को खींचे?
निर्झर में गति है, जीवन है, वह आगे बढ़ता जाता है!
धुन एक सिर्फ़ है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।
बाधा के रोड़ों से लड़ता, वन के पेड़ों से टकराता,
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन से मदमाता।
लहरें उठती हैं, गिरती हैं; नाविक तट पर पछताता है।
तब यौवन बढ़ता है आगे, निर्झर बढ़ता ही जाता है।
निर्झर कहता है, बढ़े चलो! देखो मत पीछे मुड़ कर!
यौवन कहता है, बढ़े चलो! सोचो मत होगा क्या चल कर?
चलना है, केवल चलना है ! जीवन चलता ही रहता है!
रुक जाना है मर जाना ही, निर्झर यह झड़ कर कहता है!

'जीवन का झरना'

कवि - आरसी प्रसाद सिंह

1. निर्झर के मार्ग में कौन-कौन-सी बाधाएँ आती हैं? वह उनका किस प्रकार सामना करता है?

उत्तर : निर्झर अर्थात् झरने के जीवन में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं। जैसे - उसके रास्ते में पेड़, पर्वत, पत्थर आदि आते हैं, लेकिन वह उन सब बाधाओं को पार करता हुआ आगे बढ़ता जाता है।

2. नाविक कब पछताता है और क्यों?

उत्तर : नदी में उठती ऊँची लहरों को देखकर नाविक निराश व डरकर नदी के किनारे खड़ा रहता है और नदी में नाव डालने की हिम्मत नहीं जुटा पाता। तब किनारे पर खड़े होकर पछताता है।

खंड - ख

प्र. 4. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए : 1

अड़ियल, बसेरा

उत्तर : इयल, एरा

ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग पहचानिए : 1

प्रतिच्छाया, हेडमास्टर

उत्तर : प्रति, हेड

ग) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और उपसर्ग को अलग कीजिए: 1

अंत:करण, सज्जन

उत्तर : अंत:+करण, सत्+जन

घ) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और प्रत्यय को अलग कीजिए : 1

करनी, बालक

उत्तर : कर+नी, बाल+क

ड़) निम्नलिखित विग्रह का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखें : 3

- इच्छा के अनुसार
- जेब को कतरने वाला
- जल और वायु

विग्रह	समस्त पद	समास
इच्छा के अनुसार	यथेच्छा	अव्ययी भाव
जेब को कतरने वाला	जेब कतरा	तत्पुरुष
जल और वायु	जलवायु	द्वंद्व

च) अर्थ के आधार पर निम्न के वाक्य भेद बताइए: 4

1. कहाँ से आ रहे हो?

   उत्तर : प्रश्नवाचक वाक्य

2. यदि तुमने मेहनत की होती तो तुम सफल हो जाते।

   उत्तर : संकेतवाचक वाक्य

3. परिश्रमी लोग सफल होते हैं।

   उत्तर : विधानवाचक वाक्य

4. मैं आज दिल्ली नहीं जा रहा।

   उत्तर : निषेधवाचक वाक्य

छ) निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए : 4

1. घेर-घेर घोर गगन अनुप्रास

   उत्तर : अनुप्रास अलंकार

2. धारा पर पारा पारावार यों हलत है

   उत्तर : यमक अलंकार

3. सब प्राणियों के मत्त मनोमयूर अहा नचा रहा।
   उत्तर : रूपक अलंकार

4. फूलों के आस-पास रहते हैं, फिर भी काँटे उदास रहते हैं।
   उत्तर : अन्योक्ति अलंकार

खंड - ग

प्र. 5. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (1+2+2)=5

बाबा कहते थे, इसको हम विदुषी बनायेंगे। मेरे संबंध में उनका विचार बहुत ऊँचा रहा। इसलिए 'पंचतन्त्र' भी पढ़ा मैंने, संस्कृत भी पढ़ी। ये अवश्य चाहते थे कि मैं उर्दू फ़ारसी सीख लूँ, लेकिन वह मेरे वश की नहीं थी। मैंने जब एक दिन मौलवी साहब को देखा तो बस, दूसरे दिन मैं चारपाई के नीचे जा छिपी। तब पंडित जी आये संस्कृत पढ़ाने। माँ थोड़ी संस्कृत जानती थीं गीत में उन्हें विशेष रूचि थीं। पूजा पाठ के समय मैं भी बैठ जाती थीं और संस्कृत सुनती थी। उसके उपरान्त उन्होंने मिशन स्कूल में रख दिया मुझको। मिशन स्कूल में वातावरण दूसरा था, प्रार्थना दूसरी थी। मेरा मन नहीं लगा। वहाँ जाना बंद कर दिया। जाने में रोने धोने लगी। तब उन्होंने मुझको क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में भेजा, जहाँ मैं पाँचवे दर्जे में भर्ती हुई, जहाँ का वातावरण बहुत अच्छा था उस समय। हिन्दू लड़कियाँ भी थी ईसाई लड़कियाँ भी थी, हम लोगों का एक ही मेस था। उस मेस में प्याज तक नहीं बनता था।

1. लेखिका के बाबा की क्या इच्छा थी?
   उत्तर : लेखिका के बाबा कि इच्छा उन्हें विदुषी बनाने की थी।

2. लेखिका उर्दू-फ़ारसी क्यों नहीं सीख पाई?
   उत्तर : लेखिका को उर्दू-फ़ारसी में बिल्कुल रुचि नहीं थी। उनके शब्दों में - "ये (बाबा) अवश्य चाहते थे कि मैं उर्दू-फ़ारसी सीख लूँ, लेकिन वह मेरे वश की नहीं थी।" इसलिए जब उन्हें उर्दू पढ़ाने

के लिए मौलवी साहब घर में आए तो लेखिका चारपाई के नीचे छिप गई।

3. लेखिका मिशन स्कूल जाने में रोने क्यों लगती थी?

उत्तर : लेखिका को मिशन स्कूल का वातावरण, वहाँ की प्रार्थना का अलग होने के कारण मन नहीं लगा इसलिए वे रोने लगती थी।

प्र. 6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x4=8

1. किन घटनाओं से पता चलता है कि हीरा और मोती में गहरी दोस्ती थी?

उत्तर : दो बैलों की कथा नामक पाठ में एक नहीं अनेक घटनाएँ हैं, जिनसे पता चलता है की हीरा और मोती में गहरी दोस्ती थी जैसे -

- दोनों बैल हल या गाड़ी में जोत दिए जाते और गरदन हिला-हिलाकर चलते, उस समय हर एक की चेष्टा होती कि ज्यादा-से-ज्यादा बोझ मेरी ही गर्दन पर रहे।
- दिन-भर के बाद दोपहर या संध्या को दोनों खुलते तो एक-दूसरे को चाट-चूट कर अपनी थकान मिटा लिया करते, नांद में खली-भूसा पड़ जाने के बाद दोनों साथ उठते, साथ नांद में मुँह डालते और साथ ही बैठते थे। एक मुँह हटा लेता तो दूसरा भी हटा लेता था।
- मटर खाते समय मोती के पकड़े जाने पर हीरा भी वापस आ गया और दोनों ही कांजीहौस में बंदी बनाए गए।

2. आशय स्पष्ट कीजिए- सलीम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाए अथाह सागर बनकर उभरे थे।

उत्तर : सलीम अली प्रकृति के खुले संसार में खोज करने के लिए निकले। उन्होंने स्वयं को किसी सीमा में कैद नहीं किया। टापू बंधन तथा सीमा का प्रतीक है ओर सागर की कोई सीमा नहीं

होती है। उसी प्रकार सलिम अली भी बंधन मुक्त होकर अपनी खोज करते थे। उनकी खोज की कोई सीमा नही थी। उनका कार्यक्षेत्र बहुत विशाल था।

3. नीचे दी गई पंक्तियों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए - जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्योछावर होती हैं।

उत्तर : व्यंग्य - यहाँ पर जूते का आशय समृद्धि से है तथा टोपी मान, मर्यादा तथा इज्जत का प्रतीक है। वैसे तो इज्जत का महत्त्व सम्पत्ति से अधिक हैं। परन्तु आज लोग अपने सामर्थ्य के बल अनेक टोपियाँ (सम्मानित एवं गुणी व्यक्तियों) को अपने जूते पर झुकने को विवश कर देते हैं।

4. लेखक ने शेकर विहार में सुमति को उनके यजमानों के पास जाने से रोका, परन्तु दूसरी बार रोकने का प्रयास क्यों नहीं किया?

उत्तर : लेखक ने शेकर विहार में सुमति को यजमानों के पास जाने से रोका था क्योंकि अगर वह जाता तो उसे बहुत वक्त लग जाता और इससे लेखक को एक सप्ताह तक उसकी प्रतीक्षा करनी पड़ती। परंतु दूसरी बार लेखक ने उसे रोकने का प्रयास इसलिए नहीं किया क्योंकि वे अकेले रहकर मंदिर में रखी हुई हस्तलिखित पोथियों का अध्ययन करना चाहते थे।

प्र. 7. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (2+2+1)=5

कोहरे से ढकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं
सुबह-सुबह
काम पर जा रहे हैं
हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह
भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना
काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?

1. कविता की पहली दो पंक्तियों को पढ़ने तथा विचार करने से आपके मन-मस्तिष्क में जो चित्र उभरता है उसे लिखकर व्यक्त कीजिए।

   उत्तर : कविता की पहली दो पंक्तियों को पढ़ने पर हमारे मन - मस्तिष्क में बाल मजदूरी का चित्र उभरता है। मन में यह विचार आते है कि कब इन बच्चों की यह दयनीय दशा समाप्त होगी। कब हमारा भारत सही मायनों में एक संपन्न और प्रगतिशील देश कहलाएगा जहाँ हर एक बच्चा काम के बजाए पाठशाला जाएगा और अपने सपनों को साकार करेगा।

2. कवि का मानना है कि बच्चों के काम पर जाने की भयानक बात को विवरण की तरह न लिखकर सवाल के रूप में पूछा जाना चाहिए कि 'काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?' कवि की दृष्टि में उसे प्रश्न के रूप में क्यों पूछा जाना चाहिए?

   उत्तर : बच्चों की इस स्थिति के लिए समाज जिम्मेवार है। समाज को इस समस्या से जागरूक करने के लिए तथा ठोस समाधान ढूँढने के लिए बात को प्रश्न रूप में ही पूछा जाना उचित होता है। क्योंकि यदि हम इन्हें विवरण की तरह पूछते हैं तो समस्या पर कोई ध्यान नहीं देता।

3. काव्यांश का मूलभाव क्या है?

   उत्तर : काव्यांश का मूलभाव बाल मजदूरी की विवशता पर आक्रोश करना है।

प्र. 8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x4=8

1. कवयित्री का घर जाने की चाह से क्या तात्पर्य है?

   उत्तर : कवयित्री का घर जाने की चाह से तात्पर्य है प्रभु से मिलना। कवयित्री इस भवसागर को पार करके अपने परमात्मा की शरण में जाना चाहती है।

2. बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों है?

उत्तर : बच्चे समाज का भविष्य, बच्चे समाज का भविष्य, आईना और देश की प्रगति का एक अहम् हिस्सा होते हैं। यदि समाज के इस सबसे महत्त्वपूर्ण अंग को यदि आप उचित देखभाल और अवसर प्रदान नहीं करेगें तो समाज प्रगति कैसे करेगा। सभी बच्चे एक समान होते हैं, उन्हें उनके बचपन से वंचित रखना अपने आप में घोर अपराध तथा अमानवीय कर्म है। इसलिए बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान है।

3. एक लकुटी और कामरिया पर कवि सब कुछ न्योछावर करने को क्यों तैयार है?

उत्तर : कवि के लिए सबसे महत्वपूर्ण है - कृष्ण। इसलिए कृष्ण की एक-एक चीज़ उसके लिए महत्वपूर्ण और प्यारी है। कृष्ण गायों को चराते समय लकुटी और कामरिया अपने साथ रखते थे। यह कोई साधारण वस्तुएँ न होकर कृष्ण से सम्बंधित वस्तुएँ है। यही कारण है कि कृष्ण की लाठी और कंबल के लिए कवि अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार है।

4. 'कैदी और कोकिला' कविता के आधार पर पराधीन भारत की जेलों में दी जाने वाली यंत्रणाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर : कविता के आधार पर पराधीन भारत की जेलों में दी जाने वाली यंत्रणाए निम्न थी -

- कैदियों से पशुओं की तरह काम करवाया जाता था।
- अँधेरी कोठरियों में कैदियों को जंजीरों से बाँध कर रखा जाता था।
- कोठरियाँ भी काफी छोटी होती थी।
- खाने को भी कम दिया जाता था।
- क्रांतिकारियों को चोर, लुटेरे और डाकूओं के साथ रखा जाता था।

• जेल में अमानवीय यातनाएँ दी जाती थी।

प्र. 9. "पुरखों की गाढ़ी कमाई से हासिल की गयी चीज़ों को हराम के भाव बेचने को मेरा दिल गवाही नहीं देता।" - मालकिन के इस कथन के आलोक में विरासत के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए। 4

उत्तर : हमारे पुरखों ने अनेकों संघर्ष के बाद चीजों को पाया है। इन वस्तुओं का मूल्य हम धन से नहीं आँक सकते हैं। हम चाहे इन वस्तुओं में वृद्धि न कर पाएँ परन्तु इन वस्तुओं को कौडियों के दाम पर तो न बेचे। कुछ लोग स्वार्थवश इसे औने-पौने दामों में बेच देते हैं, जो कभी भी उचित नहीं है। हमें इनके पीछे छिपी भावना को समझना चाहिए। यहाँ पर घर की मालकिन के विचार वाकई में प्रशंशा के काबिल हैं जो अभी तक अपने पुरखों की विरासत को संभाले हुए है।

खंड - घ

प्र. 10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। 10

एक समाजसेवक की आत्मकथा

मैंने अपनी पच्चीस वर्ष की आयु से ही समाजसेवा की शुरुवात कर दी थी। मेरे पिताजी एक प्रसिद्ध समाजसेवक थे, उन्होंने गाँव में लड़कियों के लिए कन्याशाला खुलवाई थी। मैंने भी उनसे प्रेरणा पाकर शोषित महिलाओं की मदद करने के लिए एक संस्था खोली। महिलाएँ यहाँ अपनी समस्याए लेकर आती थी। हमारी संस्था की महिलाए उनकी हिम्मत बढ़ाती, रोजगार दिलाती, उन्हें आत्म निर्भर बनाती ताकि वे एक अच्छा जीवन जी सके। इसके बाद मैंने गरीब लोगों के लिए चिकित्सालय बनवाए, गरीब मजदूरों के लिए रात में प्रौढ़ शिक्षा वर्ग की व्यवस्था की। फिर मैंने कुछ लोगों की सहायता से एक संस्था बनाई जिसके द्वारा कई समाजसेवा के कार्य किए जैसे - अनाथाश्रम बनाना, दहेज़ प्रथा के विरोध में अभियान चलाना, धार्मिक कार्यक्रम, किसानों के लिए भूदान अभियान, नशाबन्दी अभियान।

अब बढ़ती उम्र के साथ यह संभव नहीं की कुछ और सेवा कर पाऊँ किंतु सब को यही संदेश देना चाहूँगा कि जीवन में गरीब और लाचार लोगों की हमेशा मदद करना। इस प्रकार मैंने जीवन भर लोगों की सेवा की। लेकिन दुख इस बात का है कि आज लोग मुझे भूल गए हैं।

यदि हिमालय न होता

हिमालय संस्कृत के 'हिम’ तथा 'आलय' शब्दों से मिलकर बना है, जिसका शब्दार्थ 'बर्फ़ का घर' होता है। हिमालय भारत की धरोहर है। यह भारतवर्ष का सबसे ऊँचा पर्वत है। हिमालय हमारा सिर्फ पालक या प्रहरी ही नहीं है। न ही शांति, सुंदरता और रोमांच ही इसके मायने हैं। इन सबसे कहीं आगे हमारे अस्तित्व की सबसे बड़ी जरूरत है हिमालय।

यदि हिमालय न होता तो उत्तर भारत की सुरक्षा कौन निभाता? यदि हिमालय न होता तो गंगा, यमुना, सिन्धु और ब्रह्मपुत्र जैसी नदियाँ कहाँ से निकलती? हिमालय की छाया में एवरेस्ट, लान्स, नंदादेवी आदि इसके मुख्य हिम शिखर हैं। हिमालय भारत का पहरेदार है। यदि हिमालय न होता तो शत्रुओं से हमारी रक्षा कौन करता? हिमालय उत्तर के बर्फीले पवनों को भारत में प्रवेश करने से रोकता है। दक्षिणी-पश्चिमी मानसूनी पवन हिमालय की ऊँची पर्वत-श्रेणियों से टकराकर भारत में वर्षा करते हैं। यही वर्षा देश को कृषिप्रधान देश बनाती है। इस वजह से भारत को 'सोने की चिड़िया कहलाने का गौरव प्राप्त हुआ है।

पुराणों के अनुसार हिमालय मैना का पति और पार्वती का पिता है। गंगा इसकी सबसे बड़ी पुत्री है। भगवान शंकर का निवास कैलाश यहीं है।

महाभारत के अनुसार पांडव स्वर्गारोहण के लिए यहीं आए थे।

इस तरह हिमालय सदा से भारतीय संस्कृति, इतिहास और गौरव का साक्षी रहा है।

प्र. 11. आपके नगर में एक 'विज्ञान-कार्यशाला' का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यशाला के संयोजक को पत्र लिखकर बताइए कि आप भी इसमें सम्मिलित होना चाहते हैं। 5

सेवा में,
संयोजक महोदय,
विज्ञान-कार्यशाला,
दिल्ली।

विषय - विज्ञान-कार्यशाला में सम्मिलित होने के लिए पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मुझे आज ही पता चला है कि हमारे शहर के अमर मैदान में एक विज्ञान-कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। यह हर विज्ञान प्रेमी विदयार्थी का आकर्षण का केंद्र हैं।

मैं महेश शर्मा कक्षा दसवीं का विदयार्थी हूँ। मैं इस विज्ञान कार्यशाला में सम्मिलित होना चाहता हूँ। मैंने मेरे मित्र के साथ मिलकर एक टेलीस्कोप दूरबीन बनाया है। आपकी विज्ञान शाला में आकर दूरबीन में उसमें आवश्यकता सुधार कर उसे विज्ञान-कार्यशाला में सम्मिलित करना चाहता हूँ।

आशा है आप मुझे इसकी अनुमति देंगे। मैं आपका सदैव आभारी रहूँगा।

धन्यवाद सहित।

भवदीय,
अमर पांडे
दिनाँक -x-x-20xx

प्र. 12. बढ़ते हुए महिला अपराध के संदर्भ में दो महिलाओं के मध्य बातचीत लिखिए: 5

हेमा : अरे! प्रेमा आज बहुत दिनों बाद दिखाईं दीं? कहाँ थीं?

प्रेमा : भाभीजी के साथ एक दुर्घटना हो गई थी इसलिए इधर आना नहीं हुआ।

हेमा : ओह! क्या हो गया था?

प्रेमा : किसी बदमाश ने राह चलते गले की चेन खींच ली जिसके कारण माताजी के गले पर चोट लग गई।

हेमा : ओह! यह तो बहुत बुरा हुआ। आजकल दिनदहाड़ें ऐसी वारदातें बहुत होने लगी हैं। लगता है जैसे पुलिस और कानून का डर ही नहीं रहा है।

प्रेमा : हाँ। यदि पुलिस-विभाग अपनी जिम्मेदारी सही तरह से निबाहे तो बदमाशों की हिम्मत न हो।

हेमा : सबसे बुरी बात तो यह है कि जहाँ कुछ ऐसा बुरा घटित होता है वहाँ आस-पास मौजूद लोग भी तमाशबीन बन जाते है।

प्रेमा : तुम सही कह रही हो। लोगों को अपने जिम्मेदार नागरिक होने का कर्तव्य निबाहना चाहिए।

हेमा : क्या बदमाश पकड़ा गया?

प्रेमा : नहीं। किसी की हिम्मत नहीं हुई। वह मोटरसाइकिल पर था, झपट्टा मारकर तेजी से भाग गया।

हेमा : ओह! तुम अपनी माताजी का ध्यान रखो। मुझसे कोई भी सहायता चाहो तो बताना। माताजी को मेरा प्रणाम कहना।

प्रेमा : अवश्य। फिर मिलेंगे। नमस्कार!

हेमा : नमस्कार!